पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:16.09.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केवल 100/- रूपये का सहयोग करें

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका को नियमित को बनाये रखने के लिये केवल 100/- रू का सहयोग ''युवा उदघोष, A/N0.20024363377, IFSCode.MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा.मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेंजें।

– अनिल आर्य

वर्ष-38 अंक-8 आश्विन-2078 दयानन्दाब्द 198 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2021 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.09.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 282वां वेबिनार सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का 44वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

आर्य युवा ही देश की दिशा व दशा बदलेगे –आर्य नेता आनन्द चौहान (निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान)

चरित्रवान व संस्कारित युवाओं का निर्माण करेंगे–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार, 5 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का 44वां स्थापना दिवस समारोह ऑनलाइन सोल्लास मनाया गया। कोरोना काल में यह परिषद का 276 वां वेबिनार था। मुख्य अतिथि एमिटी शिक्षण संस्थान नोएडा के निदेशक आनन्द चौहान ने कहा कि देश की दिशा व दशा को आर्य युवा ही बदलेगे। चरित्रवान युवक राष्ट्र की धरोहर है जिसके लिए आर्य युवक परिषद सराहनीय कार्य कर रहा है। मै पिछले 42 वर्षों से आर्य युवक परिषद के साथ जुड़ा हुआ हूं। यह संस्था महर्षि दयानंद जी की विचारधारा को नई पीढ़ी में प्रेरित करने का सराहनीय कार्य कर रही है। महर्षि दयानंद जी के आदर्शों पर चलकर ही समाज व देश का नवनिर्माण हो सकता है।राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य जी के नेतृत्व में युवा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका शिविरों के माध्यम से कर रही है,जिसकी आज महती आवश्यकता है,इस पुनीत कार्य को और अधिक प्रचार प्रसार करने की आज आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि परिषद चरित्रवान संस्कारित युवा पीढ़ी तैयार करने में तत्पर है इस कार्य को और अधिक तीव्र गति दी जायेगी । वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने गत 43 वर्षों की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि आज राष्ट्र भक्ति का जज्बा बढ़ाने की आवश्यकता है,परिषद इसे और अधिक गति से आगे बढ़ायेगी। उन्होंने कहा कि समाज के हर मुद्दे पर परिषद ने अहम भूमिका निभाई है।बहुकुण्डिय यज्ञ,आर्य महासम्मेलन,राष्ट्रीय व सामाजिक मुद्दों पर धरने प्रदर्शन,युवा संस्कार अभियान, चरित्र निर्माण शिविर, गोष्ठियां, वेबिनार आदि मुख्य अंग हैं। अध्यक्षता करते हुए डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक (राज्य ओषधि नियन्त्रक हरियाणा सरकार) ने कहा कि आर्य समाज देश भक्त लोगो का समूह है इस राष्ट्रीय विचारधारा को नयी युवा पीढ़ी को ओतप्रोत करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय महामंत्री

(शेष पृष्ठ 2 पर)

हिन्दी दिवस सम्पन्न व स्वामी विरजानंद जी को दी श्रद्धांजलि

हिंदी हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है –आर्य रविदेव गुप्ता

स्वामी विरजानंद ने दयानन्द को दयानंद बनाया–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 13 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'हिंदी दिवस की सार्थकता' व स्वामी विरजानंद जी की 153वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन गोष्ठी आयोजित की गई। यह कॅरोना काल में 281वां वेबिनार था। आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं अपितु यह हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है। कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा,संस्कृति व ध्वज के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने गुजराती होते हुए भी सब लेखन कार्य हिंदी में ही किया। स्वामी जी का मानना था कि हिंदी ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पुरो सकती है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने स्वामी विरजानंद जी की 153 वी पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वह व्याकरण के सूर्य थे, उन्होंने ही महर्षि दयानंद जी को शिक्षा देकर महान विद्वान बनाया जिसका प्रकाश समस्त भूमंडल पर पड़ा और आर्य समाज की स्थापना कर विश्व पर उपकार किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि आज भी सरकारी काम काज में अंग्रेजी का बाहुल्य दिखाई देता है जिसे तोड़ने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि साहित्यकार सविता चड्ढा व अध्यक्ष महावीर सिंह आर्य ने कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी अधिकारी ही हिन्दी में कार्य करता दिखाई देता है इसे आम जन की भाषा व स्वीकार्यता लाने की आवश्यकता है । न्यायालय की भाषा व निर्णय हिंदी में ही होने चाहिये। ओम सपरा,अनिता रेलन,विमल चड्ढा(नेरोबी) ने भी अपने विचार रखे । सभी ने हिंदी में कार्य करने व दैनिक जीवन में हिन्दी को अपनाने का संकल्प लिया। गायिका रजनी चुघ,प्रवीना ठक्कर, जनक अरोड़ा, चंद्र कांता आर्या,कुसुम भंडारी, अशोक गुगलानी, आशा आर्या,रवीन्द्र गुप्ता आदि ने गीत सुनाये। हापुड़ से आनन्द प्रकाश आर्य,राजेश मेहंदीरत्ता, राज गुलाटी, ईश्वर देवी आदि उपस्थित थे।

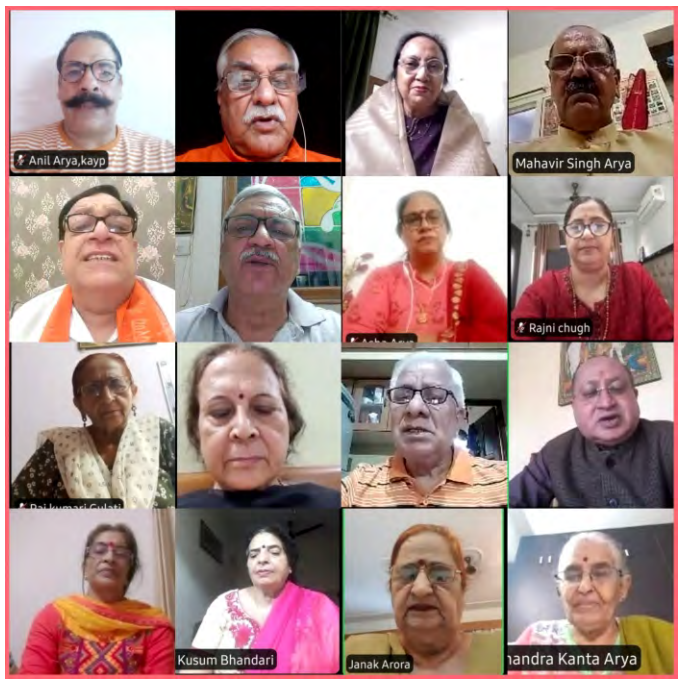

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर पर–

स्वामी दयानन्द और हिन्दी

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

भारतवर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पराधीन भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकर मन, वचन व कर्म से इसका प्रचार–प्रसार किया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि हिन्दी शीघ्र लोकप्रिय हो गई। यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यभाषा का नाम दिया था। स्वतन्त्र भारत में 14 सितम्बर 1949 को सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया जाना भी स्वामी दयानन्द के इससे 77 वर्ष पूर्व आरम्भ किए गये कार्यों का ही सुपरिणाम था। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द का अक्षुण प्रभाव स्वीकार करते हैं और हिन्दी पर साम्राज्यवादी होने के आरोपों को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि यदि साम्राज्यवाद शब्द का हिन्दी वालों पर कुछ प्रभाव है भी, तो उसका सारा दोष अहिन्दी भाषियों का है। इन अहिन्दी–भाषियों का अग्रणीय वह स्वामी दयानन्द को मानते हैं और लिखते हैं कि इसके लिए उन्हें प्रेरित भी किसी हिन्दी भाषी ने नहीं अपितु एक बंगाली सज्जन श्री केशवचन्द्र सेन ने किया था।

स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1825 में गुजरात राज्य के राजकोट जनपद में होने के कारण गुजराती उनकी स्वाभाविक रूप से मातृभाषा थी। उनका अध्ययन–अध्यापन संस्कृत में हुआ था, इसी कारण वह संस्कृत में ही वार्तालाप, व्याख्यान, लेखन, शास्त्रार्थ तथा शंका–समाधान आदि किया करते थे। 16 दिसम्बर, 1872 को स्वामी जी वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता पहुंचे थे और वहां उन्होंने अनेक वैदिक धर्म प्रचार सभाओं में संस्कृत में व्याख्यान दिये थे। ऐसी ही एक सभा में स्वामी दयानन्द के संस्कृत भाषण का बंगला में अनुवाद गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, कलकत्ता के उपाचार्य पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न कर रहे थे। अनुवादक श्री न्यायरत्न ने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान के अनेक स्थानों के सही अनुवाद न कर उसके स्थान पर अपनी विपरीत मान्यताओं को प्रकट किया जिससे संस्कृत कालेज के श्रोताओं ने उनका विरोध किया। विरोध के कारण श्री न्यायरत्न बीच में ही सभा छोड़कर चले गये थे। बाद में स्वामी दयानन्द जी को श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनायें। स्वामी दयानन्द जी ने श्री केशवचन्द्र सेन का यह सुझाव तत्काल स्वीकार कर लिया। यह दिन हिन्दी भाषा के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी कि जब एक 47 वर्षीय गुजराती मातृभाषा के संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान स्वामी दयानन्द ने हिन्दी अपनाने का सुझाव मिलने पर तत्काल हिन्दी भाषा को अपना लिया। ऐसा दूसरा उदाहरण इतिहास में अनुपलब्ध है। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रवचन किए उनमें वह हिन्दी का प्रयोग करने लगे। विश्व में प्रचलित सभी मत–मतान्तरों सहित वैदिक धर्म का सत्य सत्य परिचय कराने वाला ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है जिसकी रचना स्वामी दयानन्द जी ने की है। यह ग्रन्थ तर्क, युक्ति व प्रमाणों पर आधारित ग्रन्थ है जो देश–विदेश में विगत 146 वर्षों से सत्य धर्म के ज्ञान व मत–मतान्तरों की समीक्षा जानने के लिए उत्सुकता एवं श्रद्धा से पढ़ा जाता है। फरवरी, 1872 में हिन्दी को अपने व्याख्यानों व ग्रन्थों के लेखन की भाषा के रूप में स्वीकार करने के लगभग 2 वर्ष पश्चात ही स्वामी जी ने 2 जून 1874 को इस सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के प्रथम आदिम सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन आरम्भ किया और लगभग 3 महीनों में पूरा कर डाला। श्री विष्णु प्रभाकर इतने अल्प समय में स्वामी जी द्वारा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश जैसा उच्च कोटि का ग्रन्थ लिखने पर इसे आश्चर्यजनक घटना मानते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के पश्चात स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ लिखे जो सभी हिन्दी में हैं। उनके ग्रन्थ उनके जीवन काल में ही देश की सीमा पार कर विदेशों में भी लोकप्रिय हुए। विश्व विख्यात विद्वान प्रो. मैक्समूलर ने स्वामी दयानन्द की पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से एवं अन्त स्वामी दयानन्द जी की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर होता है। प्रो. मैक्समूलर की स्वामी दयान्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रति यह प्रशस्ति उनके वेद विषयक ज्ञान, उनके कार्यों, वेदों के प्रचार–प्रसार के प्रति उनके योगदान एवं गौरव के अनुरूप है। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश एवं अन्य ग्रन्थों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि धर्म, दर्शन एवं संस्कृति जैसे क्लिष्ट व विशिष्ट विषय को सर्वप्रथम उनके द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत कर उसे सर्वजन सुलभ किया गया जबकि इससे पूर्व इस पर संस्कृत निष्णात ब्राह्मण वर्ग का ही एकाधिकार था जिसमें इन्हें संकीर्ण एवं संकुचित कर दिया था और वेदों का लाभ जनसाधारण को नहीं मिल रहा था जिसके वह अधिकारी थे।

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के लेखन व प्रकाशन के कुछ समय पश्चात थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्री मैडम बैलेवेटेस्की ने स्वामी दयानन्द से उनके हिन्दी में लिखित ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की अनुमति मांगी तो स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें 31 जुलाई, 1879 को विस्तृत पत्र लिख कर अनुवाद से हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगति में आने वाली बाधाओं से परिचित कराया। स्वामी जी ने लिखा कि अंग्रेजी अनुवाद सुलभ होने पर देश–विदेश में जो लोग उनके ग्रन्थों को समझने के लिए संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं, वह समाप्त हो जायेगा। हिन्दी के इतिहास में शायद कोई विरला ही व्यक्ति होगा जिसने अपनी हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद इसलिए नहीं होने दिया जिससे अनुदित पुस्तक के पाठक हिन्दी सीखने से विरत होकर हिन्दी प्रसार में साधक नहीं हो सकेंगे।

हरिद्वार में एक बार व्याख्यान देते समय पंजाब के एक श्रद्धालु भक्त द्वारा स्वामी जी से उनकी पुस्तकों का उर्दू अनुवाद कराने की प्रार्थना करने पर स्वामी दयानन्द जी ने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा था कि अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। देवनागरी के अक्षर सरल होने से थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं। हिन्दी भाषा भी सरल होने से सीखी जा सकती है। हिन्दी न जानने वाले एवं इसे सीखने का प्रयत्न न करने वालों से उन्होंने पूछा कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर यहां की भाषा हिन्दी को सीखने में परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है? श्रोताओं को सम्बोधित कर उन्होंने कहा, ''आप तो मुझे अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।'' इस स्वर्णिम स्वप्न के द्रष्टा स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा है कि आर्यावर्त्त (भारत वर्ष का प्राचीन नाम) भर में भाषा का एक्य सम्पादन करने के लिए ही उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों को आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखा एवं प्रकाशित किया है। अनुवाद के सम्बन्ध में अपने हृदय में हिन्दी के प्रति सम्पूर्ण प्रेम को प्रकट करते हुए वह कहते हैं, ''जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वह इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे।'' यही नहीं आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उन्होंने हिन्दी सीखना अनिवार्य किया था। भारत वर्ष की तत्कालीन अन्य संस्थाओं में हम ऐसी कोई संस्था नहीं पाते जहां एकमात्र हिन्दी के प्रयोग की बाध्यता हो।

सन् 1882 में ब्रिटिश सरकार ने डा. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे भारत में राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा। यह आयोग हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। यद्यपि उन दिनों सरकारी कामकाज में उर्दू–फारसी एवं अंग्रेजी का प्रयोग होता था परन्तु स्वामी दयानन्द के सन् 1872 से 1882 तक व्याख्यानों, ग्रन्थों, शास्त्रार्थों तथा आर्य समाजों द्वारा वेद प्रचार एवं उसके अनुयायियों की हिन्दी निष्ठा से हिन्दी भी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन हण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की और जहां से ज्ञापन नहीं भेजे गये उन्हें स्मरण पत्र भेज कर सावधान और पुनः प्रेरित किया। आर्य समाज फर्रूखाबाद के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा, ''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड़ जावेगी।'' स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरुप देश के कोने–कोने से आयोग को बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेजे गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास की अन्यतम घटना है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से जिन प्रमुख लोगों ने हिन्दी सीखी उनमें जहां अनेक रियासतों के राज परिवारों के सदस्य थे वहीं कर्नल एच. ओ. अल्काट आदि विदेशी महानुभाव भी थे जो इंग्लैण्ड में स्वामी जी की प्रशंसा सुनकर उनसे मिलने भारत आये थे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शाहपुरा, उदयपुर, जोधपुर आदि अनेक स्वतन्त्र रियासतों के महाराजा स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे और स्वामी जी की प्रेरणा पर उन्होंने अपनी रियासतों में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया था। **(शेष अगले अंको में)**

(पृष्ठ 1 का शेष)

का शेष आचार्य महेन्द्र भाई ने परिषद की उपलब्धियों की चर्चा की व आभार व्यक्त किया। प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए कहा कि गुरु–शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है।भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है,लेकिन जीवन जीने का तरीका हमें शिक्षक ही सिखाते हैं और सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। गायिका प्रवीन आर्या, दीप्ति सपरा,सुमित्रा गुप्ता,रवीन्द्र गुप्ता, रेखा गौतम, नरेंद्र आर्य सुमन,सुदेश आर्या ने भजन प्रस्तुत किये। प्रमुख रूप से योगिराज विश्वपाल जयन्त(कोटद्वार),वेदांशु आर्य (जम्मू), भानुप्रताप वेदालंकार (इंदौर), स्वतंत्र कुकरेजा (करनाल, अजेय सहगल (डलहौजी), के के यादव, सुरेश आर्य (गाजियाबाद), यशोवीर आर्य, वेदव्रत बेहरा (उड़ीसा), रामानन), ईश आर्य (हिसार), शंकर देव आर्य (खण्डवा), दुर्गेश आर्य, ओम सपरा, धर्मपाल आर्य, देवेन्द्र भगत, डॉ. सौरभ आर्य (यमुनानगर), योगेंद्र शास्त्री (जींद), अशोक जंगड (रोहतक), के एल राणा, अरुण आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे।

हिन्दी दिवस पर राष्ट्रीय कवि गोष्ठी सम्पन्न

हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा है –डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक (राज्य ओषधि नियंत्रक, हरियाणा सरकार)
हिन्दी के विकास में कवि सम्मेलनों का अहम योगदान –ओम सपरा (पूर्व मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट)
हिन्दी सर्वत्र स्थापित हो रही है –अलका आर्या (निदेशक प्लानिंग, डी डी ए)

मंगलवार 14 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय कवि गोष्ठी का भव्य आयोजन ऑनलाइन किया गया। यह कॅरोना काल में 282 वा वेबिनार था। मुख्य अतिथि हरियाणा के राज्य औषधि नियन्त्रक नरेन्द्र आहूजा विवेक ने कहा कि राष्ट्र भाषा हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा हो जाता है। भाषा भावों की संवाहक होती है। अपने मनोभावों के सम्प्रेषण के लिए हमें मातृ भाषा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने हिंदी को दैनिक काम काज की भाषा बनाने पर जोर दिया। दिल्ली विकास प्राधिकरण की निदेशक अलका आर्या ने कहा कि आज हिन्दी सर्वत्र स्थापित हो रही है बॉलीवुड फिल्मों ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अध्यक्षता करते हुए ओम सपरा (पूर्व मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट) ने कहा कि कविता समाज को जोड़ने का काम करती है। हिन्दी कवि गोष्ठियों व सम्मेलनों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद जी ने हिंदी के प्रचार में अमूल्य योगदान दिया वह स्वदेशी के प्रबल समर्थक रहे। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने अपने निमंत्रण पत्र, नाम पट्ट हिंदी में बनवाने का आह्वान किया। कवि उमेश मेहता, प्रवीन आर्या, ऋचा गुप्ता, नताशा कुमार, रीता जयहिंद, रजनी चुघ, अनिता रेलन, नरेंद्र आर्य सुमन, सुनीता बुग्गा, अंजू आहूजा, सुरेश शुक्ला (नार्वे), विमल चड्ढा (नेरोबी), अलका गुप्ता (मेरठ), चंद्रकांता आर्या, रवीन्द्र गुप्ता, सत्यप्रकाश भारद्वाज, प्रतिभा कटारिया आदि ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की।

पंच कोष पंच प्राण पर गोष्ठी सम्पन्न

आनंदमय कोष आनंद से परिपूर्ण परमात्मा स्वरुप है–डॉ. सुषमा आर्या आयुर्वेदाचार्या

शनिवार 11 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ष्पंच कोष पंच प्राणष विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल में 279 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. सुषमा आर्या आयुर्वेदाचार्य ने पंचकोष पंच प्राण विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारे शरीर के अंदर 107 अवयवहैं स्थूल शरीर तो दिखाई देता है सूक्ष्म शरीर दिखाई नहीं देता। उन्होंने बताया कि अन्नमय कोष – अन्न तथा भोजन से निर्मित शरीर और मस्तिष्क है। प्राणमय कोष – प्राणों से बना है। मनोमय कोष – मन से बना है। ... विज्ञानमय कोष – अन्तर्ज्ञान या सहज ज्ञान से बना है। आनंदमय कोष – आनन्दानुभूति से बना है।

आत्मा की सर्वाधिक निकटता के कारण आनंद में कोष आनंद से परिपूर्ण परमात्मा स्वरुप है। मानव शरीर में प्राण को 10 भाग में विभक्त माना गया है इनमें पांच प्राण और पांच उप प्राण है प्राणमय कोष इन्हीं 10 के सम्मिश्रण से बनता है। पांच मुख्य प्राण 1,अपान 2,समान 3, प्राण 4,उदान और 5, व्यान। उपप्राणों को 1,देवदत्त 2,कृकल,3, कूर्म,4 नाग,5,धनंजय नाम दिया गया है। शरीर क्षेत्र में इन प्राणों के क्या क्या कार्य हैं ?इसका वर्णन आयुर्वेद शास्त्र में इस प्रकार किया गया है। अपान मलों को बाहर फेंकने की शक्ति से संपन्न है,वह अपान है। समान जो रसों को उत्पन्न करता है वह समान है। प्राण जो श्वास आहार आदि को खींचता है और शरीर में बल संचार करता है, वह प्राण है। व्यानअर्थात जो शरीर को उठाए रहे कड़क रखें गिरने ना दे वह व्यान है।व्यान जो संपूर्ण शरीर में सम्व्याप्त है वह व्यान है। रक्त संचार, श्वास प्रश्वास ज्ञान–तंतु आदि माध्यमों से यह सारे शरीर पर नियंत्रण रखता है। उदान मस्तिष्क को नियंत्रण करता हैपांच उपप्राण इन्हीं पांच प्रमुखों के साथ उसी तरह जुड़े हुए हैं जैसे मिनिस्टरों के साथ सेक्रेटरी रहते हैं प्राण के साथ नाग, अपान के साथ कूर्म, सामान के साथ कृकल, उदान के साथ देवदत्त और व्यान के साथ धनंजय का संबंध है नाग का कार्य वायु संचार, डकार, हिचकी,गुदा वायु कूर्म का नेत्रों के क्रियाकलाप, कृकल का भूख प्यास, देवदत्त का जम्भाई अंगड़ाई, धनंजय को हर अव्यव की सफाई जैसे कार्यों का उत्तरदाई बताया गया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि गम्भीर विषय को सरल ढंग से समझाया है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि अष्टांग योग द्वारा ही अंतर्मन में प्रभु साक्षात्कार सम्भव है। मुख्य अतिथि प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया) व अध्यक्ष सोनल सहगल ने भी कहा कि यम,नियम आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार, धारणा,ध्यान और समाधि को जीवन में उतारने पर बल दिया। गायिका प्रवीण आर्या,रजनी गर्ग, रजनी चुघ,दीप्ति सपरा,संतोष चावला, रविन्द्र गुप्ता,ईश्वर देवी, प्रतिभा खुराना, नरेश खन्ना, कुसुम भंडारी, वीरेन्द्र आहूजा,मधु खेड़ा आदि ने मधुर भजन सुनाये। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्री देवेन्द्र हितकारी सांसद प्रतिनिधि डा अनिल अग्रवाल ऑनलाइन उपस्थित रहे।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका पर गोष्ठी सम्पन्न

शिक्षक शिष्यों के माध्यम से भविष्य का निर्माण करता है –आचार्य हरिओम शास्त्री
अंधेरे में प्रकाश की लौ जलाता है शिक्षक–हरिचंद स्नेही

गुरुवार 9 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में पंच कोष पंच प्राण विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 279 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. सुषमा आर्या आयुर्वेदाचार्य ने पंचकोष पंच प्राण विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारे शरीर के अंदर 107 अवयवहैं स्थूल शरीर तो दिखाई देता है सूक्ष्म शरीर दिखाई नहीं देता। उन्होंने बताया कि अन्नमय कोष– अन्न तथा भोजन से निर्मित शरीर और मस्तिष्क है। प्राणमय कोष – प्राणों से बना है। मनोमय कोष – मन से बना है। ... विज्ञानमय कोष – अन्तर्ज्ञान या सहज ज्ञान से बना है। आनंदमय कोष – आनन्दानुभूति से बना है। आत्मा की सर्वाधिक निकटता के कारण आनंद में कोष आनंद से परिपूर्ण परमात्मा स्वरुप है। मानव शरीर में प्राण को 10 भाग में विभक्त माना गया है इनमें पांच प्राण और पांच उप प्राण है प्राणमय कोष इन्हीं 10 के सम्मिश्रण से बनता है। पांच मुख्य प्राण 1,अपान 2,समान 3, प्राण 4,उदान और 5, व्यान। उपप्राणों को 1,देवदत्त 2,कृकल,3, कूर्म,4 नाग,5,धनंजय नाम दिया गया है। शरीर क्षेत्र में इन प्राणों के क्या क्या कार्य हैं ?इसका वर्णन आयुर्वेद शास्त्र में इस प्रकार किया गया है। अपान मलों को बाहर फेंकने की शक्ति से संपन्न है,वह अपान है। समान जो रसों को उत्पन्न करता है वह समान है। प्राण जो श्वास आहार आदि को खींचता है और शरीर में बल संचार करता है, वह प्राण है। व्यानअर्थात जो शरीर को उठाए रहे कड़क रखें गिरने ना दे वह व्यान है।व्यान जो संपूर्ण शरीर में सम्व्याप्त है वह व्यान है। रक्त संचार, श्वास प्रश्वास ज्ञान–तंतु आदि माध्यमों से यह सारे शरीर पर नियंत्रण रखता है। उदान मस्तिष्क को नियंत्रण करता हैपांच उपप्राण इन्हीं पांच प्रमुखों के साथ उसी तरह जुड़े हुए हैं जैसे मिनिस्टरों के साथ सेक्रेटरी रहते हैं प्राण के साथ नाग, अपान के साथ कूर्म, सामान के साथ कृकल, उदान के साथ देवदत्त और व्यान के साथ धनंजय का संबंध है नाग का कार्य वायु संचार, डकार, हिचकी,गुदा वायु कूर्म का नेत्रों के क्रियाकलाप, कृकल का भूख प्यास, देवदत्त का जम्भाई अंगड़ाई, धनंजय को हर अव्यव की सफाई जैसे कार्यों का उत्तरदाई बताया गया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि गम्भीर विषय को सरल ढंग से समझाया है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि अष्टांग योग द्वारा ही अंतर्मन में प्रभु साक्षात्कार सम्भव है। मुख्य अतिथि प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया) व अध्यक्ष सोनल सहगल ने भी कहा कि यम,नियम आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार, धारणा,ध्यान और समाधि को जीवन में उतारने पर बल दिया। गायिका प्रवीण आर्या,रजनी गर्ग, रजनी चुघ,दीप्ति सपरा,संतोष चावला, रविन्द्र गुप्ता,ईश्वर देवी, प्रतिभा खुराना, नरेश खन्ना, कुसुम भंडारी, वीरेन्द्र आहूजा,मधु खेड़ा आदि ने मधुर भजन सुनाये। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्री देवेन्द्र हितकारी सांसद प्रतिनिधि डा अनिल अग्रवाल ऑनलाइन उपस्थित रहे।

बाजीगर का बांदरा पर गोष्ठी सम्पन्न

निर्णयात्मक बुद्धि से मन को काबू किया जा सकता है –दर्शनाचार्य विमलेश बंसल

मंगलवार 7 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में बाजीगर का बांदरा विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 277 वा वेबिनार था। वैदिक विदुषी विमलेश बंसल ने कहा कि यह मन बड़ा चंचल है, इसे बड़ी कुशलता से बुद्धिपूर्वक काबू रखना होता है। उन्होंने मन व मन के क्रिया कलाप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह मन क्या है? कैसे इसे मनुष्य वश में कर सकता है? आज हर व्यक्ति की समस्या यही है मन वश में नहीं होता। उन्होनें मदारी के खेल के रूपक द्वारा इस बात को एकदम सरलता से समझाने का प्रयास किया, जैसे– एक मदारी डमरू और एक छोटी सी रस्सी के द्वारा बंदर और बन्दरिया को वश में कर नृत्य करा जुटी दर्शक जनता को आनन्द दिलाता है और अपने प्रतिभा कौशल द्वारा अपनी आजीविका चला सुख से रहता है ठीक वैसे ही यह मनुष्य भी अपने मन रूपी बंदर को वश में निर्णयात्मक बुद्धि और शिवत्व से भरे शिवसंकल्प सूक्त रूपी डोरी से कर सकता है और वह मदारी जैसे अपनी प्रतिभा कला कौशल से सब दर्शक जनता को आनन्दित करता है वैसे ही मनुष्य का कर्तव्य है अपनी चेतन शक्ति को पहिचान, इस जड़ मन द्वारा प्रकृति का समुचित उपभोग करते हुए प्रकृति से परमात्मा में जोड़ स्वयं तो आनन्दित रहे ही अन्यों को भी आनन्दित करने वाला बने। क्योंकि यह मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः' व्यक्ति मन के द्वारा ही इस संसार में आता है और मन के द्वारा ही संसार को छोड़ परमपति के परमानन्द को प्राप्त करता है। आवश्यकता है ईश्वर की शिवमय वाणी शिवसंकल्प सूक्त को जीवन में आत्मसात कर, मन को पूर्णतया वश में कर एक कुशल मदारी बनने की व ईश्वर की वाणी का श्रवण मनन निदिध्यासन करते हुए प्रभु साक्षात्कार करने की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि मन के हारे हार है,मन के जीते जीत । व्यक्ति को मन को नियंत्रित रखकर कार्य करने चाहिए तभी वह सफलता प्राप्त कर सकता है। मुख्य अतिथि रजनी गर्ग ने मन के क्रियाकलापों पर प्रकाश डाला और कहा कि सब समस्याओं की जड़ ये मन ही है इसे ध्यान और योग से एकाग्र कर संतुलित किया जा सकता है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि मन को नियंत्रित करने में दैनिक योगाभ्यास सहायक है। गायिका प्रवीना ठक्कर,प्रवीन आर्या,रजनी चुघ,सुमित्रा गुप्ता,रवीन्द्र गुप्ता,जनक अरोड़ा, कुसुम भंड़ारी, सुषमा गुगलानी, डॉ कल्पना रस्तोगी, संतोष चावला (लुधियाना),निर्मल विरमानी, विजय चोपड़ा आदि ने मधुर भजन सुनाये। आचार्य महेन्द्र भाई, देवेन्द्र गुप्ता, देवेन्द्र भगत,राजेश मेहंदीरत्ता, प्रकाशवीर शास्त्री, प्रतिभा कटारिया, विजय लक्ष्मी आर्या,स्वीटी गर्ग,डॉ रचना चावला, करुणा चांदना,आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।

अष्टांग योग पर गोष्ठी सम्पन्न

सर्वांगीण विकास का मार्ग है अष्टांगयोग –योगाचार्य रजनी चुघ

शुक्रवार 3 सितम्बर 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अष्टांगयोग का उद्देश्य विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 274 वा वेबिनार था। योगाचार्य रजनी चुघ ने कहा कि अष्टांगयोग व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का मार्ग है, इससे ही प्रभु मिलन कि राह आसान होती है। उन्होंने बताया कि महर्षि पतंजलि द्वारा योग के 8 अंगों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि की जानकारी दी गई है। यानी कि ध्यान साधना करते हुए स्वस्थ शरीर व अपने व्यवहार को अच्छा बनाये साथ ही अपने कर्तव्य का पालन करे। तभी साधक साधना के उच्च शिखर पर पहुंच सकता है। जिससे सुन्दर व व्यवस्थित समाज की स्थापना हो सके। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है बस इसे जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने योग गीत सुनाकर प्रेरित किया। मुख्य अतिथि दया आर्या व अध्यक्ष संगीता आर्या ने योग की महत्ता पर बल दिया। गायक रवीन्द्र गुप्ता, उर्मिला आर्या, दीप्ति सपरा, प्रवीन आर्या, प्रवीना ठक्कर ,रजनी गर्ग, ईश्वर देवी, सुशांता अरोड़ा, कृष्णा भाटिया, संध्या पांडेय, उषा आहूजा, मर्दुल अग्रवाल, सुमित्रा गुप्ता आदि ने मधुर गीत सुनाये। हापुड़ से आनन्द प्रकाश आर्य,देवेन्द्र गुप्ता (इंदिरापुरम), महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, आस्था आर्या, राजेश मेहंदीरत्ता, अमरनाथ बत्रा,डॉ आर के आर्य,के के यादव,सुषमा गुगलानी आदि उपस्थित थे।

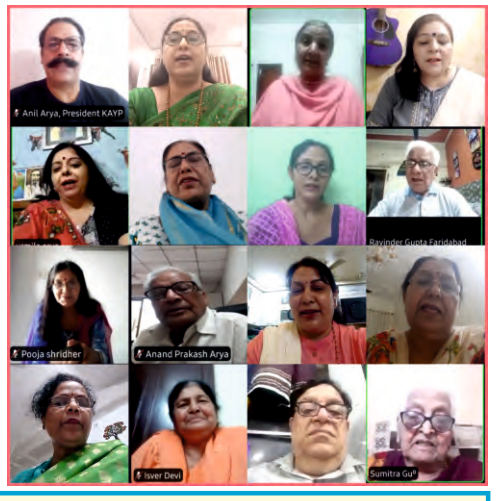

आर्य शिक्षकों/शाखा अध्यक्षों से दो शब्द

आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के सम्मानित कर्मठ कार्यकर्ता हैं। कॅरोना काल मे सभी कुछ अव्यवस्थित हो गया था। अब धीरे धीरे जीवन सामान्य होता जा रहा है यद्यपि कॅरोना अभी गया नहीं है, हमें सावधानी तो रखनी ही है।

परिषद की शाखाएँ/कार्यक्रम भी रुक गए थे लेकिन विभिन्न मुद्दों पर ऑनलाइन 282 वेबिनार करके परिषद को हमने जीवंत व अग्रणी आंदोलन बनाये रखा है।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप साप्ताहिक शाखाएँ रविवार व अवकाश के दिन आयोजित करें, उसका स्वरूप संध्या–यज्ञ, ध्यान–योगा सत्र, खेल कूद, कब्बडी, बालीबाल, फुटबॉल, जुडो कराटे, किर्केट, कुश्ती, आत्म रक्षा शिक्षण, संगीत भजन, बौद्धिक, कैरम बोर्ड, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता से प्रारंभ कर सकते हैं।

आईये पुनः उत्साह के साथ फिर निकले मैदान में और जोड़िए अपने नये पुराने साथियों को।

आपके सुझावों का सदैव स्वागत है ।

–अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, (9810117464)

आर्य बंधुओं से अपील व आभार

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के कॅरोना काल में 282वेबिनार, नियमित कार्यालय संचालन, युवा उदघोष पत्रिका का सफल प्रकाशन, विद्वानों का सम्मान, यज्ञ शाला मरम्मत आदि सभी कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं। इन समस्त गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए आप अपना सहयोग अवश्य प्रदान करे। पुस्तकों के लिए दो लोहे की अलमारी भी चाहिए। कृपया अपना योगदान क्रॉस चौक द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के नाम से कार्यालय– आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली–110007 के पते पर भिजवाने की कृपा करें अथवा आप सीधा ऑनलाइन भी सहयोग कर सकते हैं।

बैंक विवरणः–

Kendriya Arya Yuvak Parishad,
खाता स.10205148690,
IFS code- SBIN0001280,
SBI Clock Tower, Delhi-110007,
Paytm, Google pay,
Phone Pay at :- 9958889970, 9911404423

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970